भारतीय संविधान की एकात्मक एवं संघात्मक विशेषताएं

- भारतीय संविधान का सबसे विवादास्पद लक्षण उसका संघात्मक स्वरूप है। ऐसा संविधान के प्रथम अनुच्छेद से ही विदित हो जाता है, जिसमें भारत को राज्यों का संघ (union of States) कहा गया है। कुछ न्यायविद व राजनीति सिद्धान्तशास्त्री व टिप्पणीकार इसे संघात्मक (Federal) कुछ इसे एकात्मक (unitary) तथा कुछ विचारक मध्यमवर्ग का अनुसरण करते हुए अर्द्ध - संघात्मक (quasi-federal) कहते है।

संघवाद का अर्थ (Meaning of Federalism)

केंद्रीय व प्रान्तीय सरकारों के बीच शक्तियों के वितरण या उनके एकत्रण के सन्दर्भ में विश्व की राजनीतिक व्यवस्थाओं को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जाता है। - एकात्मक और संघात्मक। एकात्मक व्यवस्था में एक प्रत्यक्ष सम्प्रभु शक्ति के हाथों में राज्य की सत्ता केन्द्रीकृत होती है।
संघात्मक व्यवस्था में संविधान द्वारा स्थापित तथा नियन्त्रित विभिन्न इकाइयों के बीच शक्तियों का वितरण होता है।

कुछ महत्वपूर्ण वक्तव्य (some important Statements)

- मैं नहीं जानता कि कनाडा के संविधान में यूनियन शब्द का प्रयोग किया गया। भारत एक संघ है जिसकी इकाई उसे छोड़ नहीं सकती। संघ अनाशवान है।
डॉ० बी. आर. अम्बेडकर

- संविधान के प्रावधान यह स्पष्ट करते है कि एकात्मक है। आप केन्द्र व राज्यों के बीच शक्तियों के वितरण का कोई वर्गीकरण करें।

क्षेत्रीय परिषदें
(Zonal councils)

संघीय व्यवस्था में केन्द्र व राज्यों के बीच शक्तियों का वितरण किया जाता है। लेकिन यह भी जरूरी हो जाता है। इकाइयों को एक दूसरे से जोड़ा जाये। ताकि केन्द्र व राज्यों के बीच फूट - फूट की प्रक्रिया शुरू न हो सके। राज्यों के पुनर्गठन की प्रक्रिया चलती रही। अतः नये राज्यों का निर्माण हुआ।

कुछ राज्यों व क्षेत्रों के लिए विशेष प्रावधान
(Special Provisions for some States and areas)

हम देख चुके है कि भारत में संघात्मक व्यवस्था स्थापित की गयी है। अतः केन्द्र व राज्यों के बीच शक्तियाँ का वितरण किया गया है, राज्य की सरकारों को अपने आवंटित क्षेत्र में स्वायतता दी गयी है।
केन्द्र किसी संघ - शासित क्षेत्र को राज्य का दर्जा दे सकता है जैसे हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, त्रिपुरा, गोवा, मिजोरम व अरुणाचल प्रदेश बिहार व मध्यप्रदेश को काटकर क्रमशः उत्तराखण्ड, झारखण्ड व छत्तीसगढ़ के राज्य बने।

हमारा संविधान हमारे राष्ट्र का आधार स्तंभ है।

~~1950~~ 1950 में इसका उद्घाटन हुआ और तभी से यह चला आ रहा है।
दुर्भाग्य की बात है कि शैशव समय में इसके क्रियान्वयन में गिरावट आयी है। अब भारत को इससे बड़ा अन्य कोई आवश्यकता नहीं है कि यहाँ ईमानदार लोग हो, जो देश के हित को अपने समझ रखें।